

पृष्ठ 2

CRY
आरंभ- एक शुरूआत

पृष्ठ 4



चाष्टीय शिक्षा एवं अनुसंधान आयोग बिल

पृष्ठ 5



नोशन इंक

पृष्ठ 7



SRIC

जिमखाना चुनाव पर एक नज़र

पिछले एक महीने से चले आ रही चुनावी गहमागहमी, जोड़ तोड़ की राजनीति एवं अनिश्चितताओं का दौर 20 मार्च को सेलेस्टीन जोसेफ के गाइस प्रेसिडेंट चुने जाने के साथ ही समाप्त हो गया। इस बार के जिमखाना चुनाव ने पुरानी परम्पराओं और चुनावी समीकरणों की बघिया उधेड़ कर रख दी। चुनाव की पहली खास बात तो यह रही की कई वर्षों बाट आई.आई.टी. केजीपी की जनता को वाइस प्रेसिडेंट पद के लिए तीन विकल्प मिले। इसके अलावा एक और जहाँ जनरल सेक्रेटरी खेलकूद के उम्मीदवार सौगत मुर्मु के अख्तरण रहने के कारण जनरल सेक्रेटरी खेलकूद का SOP स्थगित करना पड़ा, वही वाइस प्रेसिडेंट का SOP भी गेसम की बाधाओं के कारण रद्द किया गया। बाद में 18 तारीख को दोनों SOP सम्पन्न हुए। नतीजे भी काफी दोचक रहे। वर्षोंपांत कोई गैरफ्रेस्ट व्यक्ति वाइस प्रेसिडेंट के पद पर आसीन हुआ। साथ ही साथ निर्दलीय उम्मीदवार अंकित सिंह को मिला अपार जनसमर्थन इस बात को साबित करता है कि केजीपी की जनता ने इस चुनाव में पोल्टु और पैकट से ऊपर उठ कर

वाइस प्रेसिडेंट जिमखाना : सेलेस्टीन जोसेफ
डिपार्टमेंट : इंडस्ट्रीयल इंजीनियरिंग एवं मैनेजमेंट

छात्रावास : पटेल छात्रावास

प्रस्ताव :

- छात्रों के लिए "छात्र इंटर्नशिप कमिटी" की स्थापना जो कि हमारे अल्परनी नेटवर्क की मरम्मत से छात्रों के लिए इंटर्नशिप के बेहतर अवसर उपलब्ध कराएगी। यह कमिटी TnP के तहत काम करेगी और विदेशी विश्वविद्यालयों से MoU पर हस्ताक्षर करने का प्रयास करेगी।
- होटल पार्क और पूरी गेट के बीच में लाइट्स लगाकर

नाम : अमिषेक राज

विभाग : कैमिकल इंजीनियरिंग

हॉल : मेघनाद साहा

पद : जनरल सेक्रेटरी, खेलकूद

- एक पूरी तरह खेल के प्रति समर्पित पुस्तिका का प्रस्ताव - योजना के अनुरूप यह पुस्तिका दो संस्करणों में वितरित की जाएगी।
- प्रथम संस्करण - सेशन के autumn सेमेस्टर में प्रकाशित यह पुस्तिका फ्रेशर्स इवेंट, ओपन-आ, इंटर-हॉल, एवं शौर्य के बारे में जानकारी देगी।
- द्वितीय संस्करण - चिंगंग सेमेस्टर में प्रकाशित होने वाली इस पुस्तिका में इंटर-हॉल की विभिन्न गतिविधियों की वर्त्तुलिति, इंटर-आ, के नतीजे एवं विश्लेषण होगा।

- एक नया स्केटिंग क्लब खोलने का प्रस्ताव

नाम : राधव बशाम्भु

विभाग : गणित विभाग

कोर्स : सांख्यिकी एवं सूचना

हॉल : मेघनाद साहा हॉल

पद : जनरल सेक्रेटरी सोशल एवं कल्चरल

प्रस्ताव :

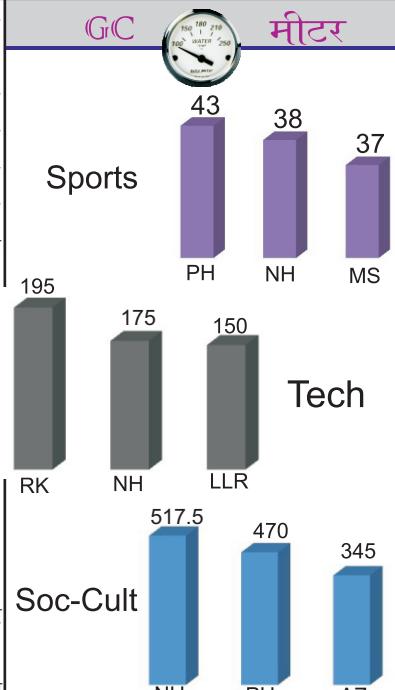
- सामाजिक प्रेरणा जगाने एवं विशेषज्ञ निर्णय हेतु NGOs से निर्णायक बुलावाए जाएँगे। SOS चिल्ड्रेन विलेज, काई, सिनी इंडिया एवं ग्रीनपीस से मैंजूरी मिल चुकी है। OPEN IIT नाटक में इसे प्रायोगिक रूप से लागू किया जाएगा।
- SF के प्रचार हेतु SF मर्चेन्डाइज़ शुरू की जाएगी। इसमें शार्ट, स्वेटर्शर्ट, चॉकलेट, बैग्स इत्यादि का प्रयोग किया जाएगा।
- कठिन अकादमिक कार्यक्रम के बावजूद जो छात्र हर कार्यक्रम एवं प्रस्तुतियों में बढ़िया प्रदर्शन करते हैं, उन्हें पुरुरकृत करने हेतु रिकॉर्ड किया जाएगा, फिर उन्हे प्रसारण हेतु समाचार चैनलों के पास भेजा जाएगा। दूरदर्शन, न्यानदर्शन एवं ई टीवी बांगला से सहमती मिल चुकी है।



सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाना जिससे छेड़छाड़ की बढ़ती घटनाओं पर रोक लग सके।

3 कैम्पस में तीन प्रमुख स्थानों पर इलेक्ट्रॉनिक नोटीस बोर्ड की रक्खापना जिससे छात्रों में कैम्पस की विभिन्न गतिविधियों के प्रति जागरूकता बढ़ सके। इसके अलावा जिमखाना वेबसाइट पर जिमखाना के विभिन्न पद्धारियों को अपने प्रस्तावों के बारे में जानकारी अपडेट कर सकें।

4 मेस के खाने की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए मेस कर्मचारियों के लिए मई माह में प्रशिक्षण शिविर लगाना।



मूले बिसरे लिंगो

ट्रिवा - संयुक्त प्रवेश परिक्षा में आपका स्थान या JEE में AIR(All India Rank)

पंजी डूडे

अब मायाती की तरह ही छात्रों को Private मेस कॉन्ट्रैक्टर्स को नोटों की माला पहनानी पड़ रही है।



नाम : देवेश कुमार धूव

विभाग : विद्युत अभियांत्रिकी विभाग

हॉल : लाला लाजपत राय हॉल

पद : जनरल सेक्रेटरी खेल
प्रस्ताव :

1 सर्वशेष व्यक्तिगत प्रदर्शन के लिए दिए जाने वाली पुरुषकारों की संख्या बढ़ाना।

2 आने वाली ईन्टर आई आई टी खेल प्रतियोगितों में प्रदर्शन सुधारने के लिए ईन्टर आई आई टी खेल प्रतियोगिता तथा शौर्य के लिए कप्तान व उपकप्तान नियुक्त किए जाएँगे, जिनकी हर 14 दिन में कोच व जीसेक के साथ मीटिंग होंगी। ऑफसीजन में ईन्टर आई आई टी के खिलाड़ियों के लिए जिम में एक रॉलॉट उपलब्ध कराया जाना।

3 आई आई टी खड़गपुर की टीम का पहले से ज्यादा ईन्टर कॉलेज खेल प्रतियोगिताओं में प्रतिस्पृष्ठा करना।



नाम : हिमांशु सिन्धूल

विभाग : कैमिकल इंजीनियरिंग

हॉल : नेहरू हॉल

पद : जनरल सेक्रेटरी सोशल एवं कल्चरल

प्रस्ताव :

1 EAA में संगीत, नाट्य कला, व चित्रकला को भी जोड़ा जाना। जिससे इन्हें कैम्पस में बढ़ावा मिले।

2 GC के लिए बाहर की संस्थानों से निर्णायक बुलवाना।

सेक्रेटरी :

फोटोग्राफी	र्हषि	फुटबॉल	देव किशन
टेक्नोलॉजी	अमृतांशु आनंद	हॉकी	सलिल कंसल
इनोवेशन	प्रणीत काया	इनडोर गेम्स	आशीष कोठारी
एथेलिटिक्स	दीप्ति बी पुजारी	टैनिस	नवीन कुमार
बैडमिंटन	नम्रता नायक	वॉलीबॉल	पवन कुमार
बॉर्टकेटबॉल	रचना राणा	इंटरटेनमेंट	आरथा गुप्ता
क्रिकेट	आशुतोष कुमार	इमैटिक्स	तेजल काम्बले

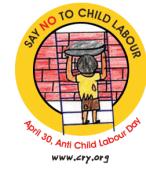
जर्नल	राधा किशोर
लिटरेरी	अंशुल भाटिया
फिल्म	शिल्पा गैतम
फाइन आर्ट	नितेश झा
वेट लिफ्टिंग	अजय यादव



प्रस्ताव :

- सामाजिक प्रेरणा जगाने एवं विशेषज्ञ निर्णय हेतु NGOs से निर्णायक बुलावाए जाएँगे। SOS चिल्ड्रेन विलेज, काई, सिनी इंडिया एवं ग्रीनपीस से मैंजूरी मिल चुकी है। OPEN IIT नाटक में इसे प्रायोगिक रूप से लागू किया जाएगा।
- 2 SF के प्रचार हेतु SF मर्चेन्डाइज़ शुरू की जाएगी। इसमें शार्ट, स्वेटर्शर्ट, चॉकलेट, बैग्स इत्यादि का प्रयोग किया जाएगा।
- 3 कठिन अकादमिक कार्यक्रम के बावजूद जो छात्र हर कार्यक्रम एवं प्रस्तुतियों में बढ़िया प्रदर्शन करते हैं, उन्हें पुरुरकृत करने हेतु रिकॉर्ड किया जाएगा, फिर उन्हे प्रसारण हेतु समाचार चैनलों के पास भेजा जाएगा। दूरदर्शन, न्यानदर्शन एवं ई टीवी बांगला से सहमती मिल चुकी है।

Child Rights and You (CRY) भारत का एक प्रमुख NGO है जो शोषित एवं निर्दिष्ट बच्चों के लिए पिछले 30 सालों से काम कर रहा है। CRY का मुख्य उद्देश्य समाज, मीडिया और सरकार के साथ मिलकर बाल अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाना है जिससे चाज्य की नीतियों में बालक वर्ग का प्रतिनिधित्व हो। इसके लिए CRY कई NGOs को सहायता दे रहा है जो सीधे तौर पर क्रियाशील हैं।



खड़गपुर में CRY के लक्षणोंके ने आलपास के इलाकों में बच्चों से संबंधित कार्यकर्मों के सामाजिक परीक्षण का बीड़ा उठाया है। इसमें किसी योजना से लाभान्वित होने वाले लोग उसका मूल्यांकन एवं निगरानी करते हैं ताकि

उससे ज्यादा से ज्यादा लाभ हो। मिदनापुर जिले में कई योजनाएँ जैसे मध्यान्ध भोजन योजना, ऑंगनवाड़ी योजना, NREGA, BPL योजना आदि जो कि सफल हो सकती थी, वे खराब प्रशासन का शिकार हुई।

चित्र अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। यही द्यान में रखते हुए कैम्पस में छात्रों में जागरूकता फैलाने के लिए CRY एक फोटोग्राफ़ी कॉन्टेस्ट आयोजित करता रही है। इच्छुक छात्र अधिक जानकारी के लिए CRY से संपर्क कर सकते हैं।

संपर्क सूत्र : cryitkgp@gmail.com +919831285877.

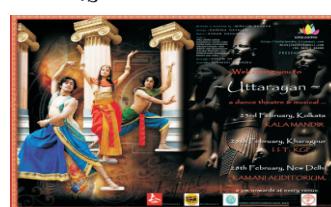
आरंभ- एक झलक

पिछले दिनों आई.आई.टी खड़गपुर में एक नये NGO आरंभ की शुरूआत हुई। आई.आई.टी खड़गपुर के एक छात्र ने टाटा जागृति यात्रा 08 के दौरान हुए अनुभव से लीख लेते हुए इसकी शुरूआत की। आरंभ ने मुख्यतः तीन कार्यक्रम वर्त्त सम्मान, टेक शाला और हेल्थ कैम्प आयोजित किये हैं।

गूँज जो कि भारत के अंदरूनी भागों में अपनी सामाजिक कार्यों के लिए अंतराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति पा चुका है, उसके तर्ज पर आरंभ ने भी वर्त्त सम्मान की शुरूआत की है इसके तहत कॉलेजों में छात्रों द्वारा उपयोग हो चुकी बेकार वस्तुओं जैसे कपड़े को जरूरतमंदों के बीच पहुँचाया जाएगा। टेक शाला के अंतर्गत आरंभ ने Architecture डिपार्टमेंट में उपयोग हो कर बेकार हो चुकी sheet को

कला और संस्कृति का अद्भुत संगम: उत्तरायण

सम्पूर्ण भारतवर्ष के युवा संगीतज्ञों, नर्तकों, सूजनात्मक सांस्कृतिक उपक्रमियों एवं IIT खड़गपुर के भूतपूर्व छात्रों के सहयोग परिणामस्वरूप प्रस्तुति हुई एक अद्भुत नाटक 'उत्तरायण' की। सौभाग्यवश इसकी एक प्रस्तुति हमारे अपने IIT खड़गपुर के परिसर में भी हुई। 'उत्तरायण' के निर्देशक हैं 'मिराजुर रहमान' और इसका आयोजन 'सहज-पदमा' जो कि एक सांस्कृतिक संस्थान है एवं 'रत्नाकला पदमाकुटिरा ट्रस्ट' द्वारा सामूहिक रूप से कराया गया।



नेत्रहीनों के स्कूल में मेजी जाएगी जिसका उपयोग ब्रेल लिपि में पढ़ाने में किया जाएगा। ऐसी 1000 से ज्यादा sheet आई.आई.टी खड़गपुर से इकट्ठी की जा चुकी हैं। इसके अलावा गाँवों में कंप्यूटर साक्षरता को बढ़ावा देने हेतु 16-22 वर्ष के लोगों को प्राथमिकता दी जाएगी। 'हेल्थ चैकअप' के अन्दर आरंभ ने आई.आई.टी खड़गपुर के नजदीकी गाँवों में निरंतर हेल्थ चैक अप की जाएगी। इन कार्यों के फंड के लिए आरंभ वेबसाइट डिजाइन, पोस्टर आदि बनाते हैं। आरंभ के कामों की प्रशंसा खुद गूँज के डायरेक्टर अंशुल गुप्ता ने की है। गूँज विश्व प्रशिद्ध एवं हाँजों भारत में घहराई से फैला हुआ है।

विभागोदस्तव पर एक नजार

ChemInsight 2010

कैमिकल इंजीनियरिंग का ये फैस्ट 20 मार्च को शुरू हुआ जिसका उद्देश्य छात्रों, फैकल्टी और औद्योगिक क्षेत्र के मध्य परस्पर संवाद स्थापित करना था। इसका उद्घाटन BOC के प्रबंध निदेशक डॉ. एस के मैनन ने किया। फैस्ट को BOC, CNC Techniques और ICHE कंपनियों ने स्पान्सर किया। फैस्ट के दौरान ABC(बी प्लॉन प्रतियोगिता), यूरोका (टेक्निकल पेपर प्रज्ञेन्टेशन), केमिनोवेशन, प्रॉसेस डिजाइन, पैनल डिस्केशन, जिजासा, सूचि, केमसॉफ्ट आदि का आयोजन हुआ। फैस्ट सफलता पूर्वक 21 मार्च को संपन्न हुआ।

Samudra Manthan '10

ओसिएन इंजीनियरिंग व नेवेल आर्किटेक्चर विभाग का ये फैस्ट 13 मार्च को शुरू हुआ। फैस्ट को Bharati shipyard, Pipavav shipyard, corporate shipyard, IMARE Kolkata व OSTC ने स्पान्सर किया। फैस्ट का बजट लगभग 25 लाख रुपये व लगभग ₹ 70000 प्रतिभागियों को इनाम दर्शाया गया। फैस्ट के दौरान श्री आलोक मिश्रा, श्री पी के भटटाचार्य व श्री बीजित सरकार के गेस्ट लेक्चर और आर्याटेक, डिल्ली द्वारा ANSYS व SACS पर वर्कशॉप हुए। Amphibian Quest(16 टीम), Nettyoage(7 टीम), Finding Nemo(9 टीम), IDP(5 टीम), Zephyr(5 टीम) व Qcenia Quiz (18 टीम) जैसे प्रतियोजिताओं का आयोजन हुआ। फैस्ट सफलता पूर्वक 14 मार्च को संपन्न हुआ।



मेटलर्जिकल एंड मेटीरियल इंजीनियरिंग विभाग का ये फैस्ट 13 मार्च से शुरू हुआ। इसका उद्घाटन टाटा स्टील के प्रबंध निदेशक के मुख्य सलाहकार डॉ. अमित चैटर्जी ने किया। फैस्ट के दौरान ल्युमिनरी लाइटिंग नामक कॉलोक्वियम हुआ जिसे आई.आई.टी. खड़गपुर के प्रो. एस. बी. संत ने संचालित किया। वहाँ निम्न मुख्य हस्तियाँ मौजूद थीं :

1. डॉ. बी के डीना Dean of Academic and Research, IIT Ropar

2. डा एच एस ऐ, exdirector, IMMT Bhubaneshwar, CSIR

3. डॉ एलक्ज़ी इ रोमोनोत. Leader Researcher, Sector Theory of Solids, Ioffe physico-Technical Institute RAS, St. Petersburg, Russia

4. प्रो. आर एन घोष (आई.आई.टी. खड़गपुर)

फैस्ट में मेटेलिका बोनान्जा नामक औद्योगिक दौर के तहत प्रतियोगियों को टाटा मेटेलिक्स, खड़गपुर ले जाया गया। इसके अलावा हाई ब्रो हैपनिंग्स नामक इंजीनियरिंग विचार, विचार्डस ऑफ ओजेड नामक रक्क्ला विचार, टेक्नोवा नामक टेक्निकल पेपर प्रतियोगिता आदि कई आयोजन हुए। फैस्ट सफलता पूर्वक 15 मार्च को संपन्न हुआ।

Enjoy the specific taste of Indian, South Indian, Chinese, Tandoor dishes at the food café

Dream Land Restaurant & Amul Dream Parlour

For home delivery contact

Ph:- 9434369113
9434721001

Prop. : Subrata Sarkar (Bhai)
Prem Bazar Road, IIT Kharagpur

बंदूक की चूक

हाँ तो हर साल की तरह इस बार भी NCC के कैम्प की बुरी यादों के बाद अगले सेमेस्टर में लगभग सभी कैडेट्स के टेम्पो और अटैनेंस, दोनों गिर गए। जनवरी-फरवरी के शनिवार तो सोते हुए कट गए, मार्च में ही वापस वह तर्दी पहनने की हिम्मत जुटा पाए जिसे 10 दिन तक उतारा नहीं था।

तो अगले हफ्ते शुक्रवार रात को हम 7-8 अलार्म लगा के सो गए, पर आदत से मजबूर उठे तो लंच के समय ही। अब हमारी अटैनेंस शीट उज्जैकिरान की ओलंपिक टैली के जैसी नजर आ रही थी-10 के 10 खाँचे खाली। अगले हफ्ते बड़ी हिम्मत कर हम लेट ही सही, क्लास पहुँचे तो 5 चक्कर लगाने के बाद पता चला कि आज फायरिंग होने वाली है। जिस कैम्प ग्राउंड को छोड़ते वक्त फिर कभी ना देखने की कसम खाई थी, ले-दे कर वही वापस ले जाया गया।

फिर सही NCC स्टाइल में 1 घंटे तक हमारी अटैनेंस हुई और साईंकिले लाईन में लगवाई गई। धूप के भयंकर रूप धारण कर लेने का शुभ मुहूर्त निकालने के बाद आखिर कछुआ गति से फायरिंग शुरू हो ही गई। अब वे बंदूके प्राचीन ही सही, पर उनमें दम बढ़ता था। इतना दम था, कि मैदान से चलाई हुई गोलियाँ सीमा सेंटर में जा कर गिर रही थी, जहाँ अनाथ बच्चे उनसे कँचे खेल रहे थे।



सीमा सेंटर का चौकीदार दौड़ा-दौड़ा हमें रोकने

आया तो हमारे गार्ड ने उसे रोक लिया। आखिर ज़ांडे और डंडे

की लड़ाई में डंडा ही जीता, और उसने आकर हमें मुड़वा दिया। नवीजन अब हम सूरज की ओर मुँह करके बैठे थे- जिस कारण कैडेट्स के सब का बाँध टूटा जा रहा था। जब 4 घंटे में 1 तिहाई लोगों की ही फायरिंग हो पाई- तो आँखों में इतनी

धूप पड़ने के बावजूद आशा की कोई किरण नजर नहीं आ रही थी।

सभी ने लंच के वक्त तौटने का आग्रह किया, पर अफसरों ने एक ना सुनी। कैम्पस में चल रही पोल्ट से प्रभावित कैडेट्स ने 'वॉक-आउट' करने की धमकी दी तो जवाबी हमले में अटैनेंस काट देने की धमकी मिली। यहाँ गर्मी ने बुरा हाल कर रखा था-तो हम भी कब तक 'उपस्थिति में प्राण गँवाते'। आखिर सभी कैडेट्स के सब का बाँध टूट गया, और विद्रोह की आग भड़क उठी। साईंकिले निकालते हुए हम पर जब अफसर चिल्ला रहे थे-तो हम भी फँडा दे निकल लिए कि

अब और रुके यहाँ तो

हो जाएँगे डीप-फाई,

तेल लेने गई हमारी अटैनेंस

जान बची लाखों पाए।

KGP में Poltu..... हाई है!!!

तो भई! जैसे दीवाली से पहले आता है दशहरा, नये साल से पहले आता है किसास और होली से पहले आता है मिडसेम; ठीक वैसे ही जिमखाना चुनाव से पहले आते हैं हॉल डे। अब आप यदि ये पूछेंगे कि हॉल डे और चुनाव में क्या सम्बन्ध, तो हम यही कहेंगे कि बन्धु! हर समय लपपर से चिपके रहने कि बजाय थोड़ी देर बाहर भी निकल लो, हॉल डे में क्या-क्या हो रहा है, सब समझ में आ जाएगा।

खैर, चूँकि हम 'आवाज़' के रिपोर्ट होने के नाते आप तक हर खबर पहुँचाते हैं, तो चलिए हॉल डे की दारतां भी हम ही सुना देते हैं। हॉल डे के बारे में हमने हमारे बुजुर्ग सीनियर्स से कई तारीफ़ सुन रखी थीं, तो हम पूरे जोश-खरोश के साथ इसका अनुभव लेने विभिन्न हॉलों में गए। एक हॉल विशेष, जिसका हॉल डे एकदम शुरूआती दिनों में था, वहाँ हम उत्सुकतावश समय से पहले ही पहुँच गए। जाते ही हमें सफेद कमीज़ (सफेद भी ऐसी की TIDE वाले भी "चौक" जाएँ) और काले पैंथारी एक इंसान ने पकड़ लिया। उसके साथ खड़े एक और बंदे ने दक्षता शाक्कर घुली वाणी में कहा, "ये महाशय फलां हैं, फलां हॉल से हैं, फलां पोस्ट के लिए। (देखिए पाठक महाशय, उम्मीदवार इतने ज्यादा हैं कि हर एक का नाम लिखने के बजाय हम फलां लिखकर सबको एक साथ कवर कर लेते हैं। वैसे ये पलिक है, सब जानती है।)

आगे उन उम्मीदवार ने बड़ी भौली सूरत बनाकर पूछा, "कहाँ से हैं आप? कौनसा डिपार्टमेन्ट? कौनसा हॉल है आपका?" हमने कहा, "जी, मैं लखनऊ से हूँ। सिविल इंजीनियरिंग डिपार्टमेन्ट, और... से हूँ। वे बोले, "अरे लखनऊ! बड़ा ही सुन्दर शहर है। आपका तो डिपार्टमेन्ट भी बड़ा अच्छा है। और... तो बढ़त ही अच्छा हॉल है, एकदम हवादार कमरे हैं। (हमको लगा कि हम सपना देख रहे हैं, वरना किसी सीनियर के मुँह से की तारीफ़; भारत हाँकी का वर्ल्कप जीत सकता है, पर कोई सीनियर की तारीफ़ नहीं कर सकता।) उन जनाव के

मित्र ने उनकी पूर्व करतूतों (माफ़ कीजियेगा, उपलब्धियों) का ब्यौरा दिया और हमासे हमारे इकलौते गोट की माँग लिया गया। खैर, इतने में उन महाशय के समर्थक कुछ और फच्चों को ले आए। वही extra शाक्कर घुली वाणी में परिचय दिया गया, और जवाब में मुम्बई से लेकर कोलकाता और कश्मीर से कन्याकुमारी तक सारे शहर सुन्दर हो गए। (जिमखाना चुनाव का तो पता नहीं, पर भारत सरकार को शहरों के सौन्दर्यकरण का काम इन महाशयों को ही सौंपना चाहिए।) हर डिपार्टमेन्ट एक दूसरे से बढ़िया बताया गया, और हर हॉल का टेम्पो हाई हो गया।

इतने में हमें हमारे कुछ मित्र दूसरे उम्मीदवार से मिलाने ले गए। वे कुछ यूँ शेखी बघार रहे थे कि नया जिमखाना बनवाने के लिए उसने बहुत फाइट मारी है। (नया जिमखाना वैसे ही बन रहा है, जैसे भारत महाशक्ति बन रहा है, 2020 तक उम्मीद है।) कुछ बंदियाँ भी उम्मीदवार थीं, कल तक तो हमारे हाय कहने पर मुँह बिचकाकर रह जाती थीं, आज खुद आगे बढ़कर अपना नंबर तक दे रही थीं। हमारे साथियों ने तो इस limited offer का भरपूर फायदा उठाया और हर जगह से ट्रीट मारी।

लगभग यही सिलसिला हर हॉल के हॉल डे में देखने को मिला। हालांकि इन उम्मीद के उम्मीदवारों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती रही। हमें तो हर दूसरा बंदा सफेद-काले कपड़ों में, डायरी लिए दिख जाता था। हालांकि के फच्चे बड़े नाखुश थे। हमने पूछा तो पता चला कि वहाँ उम्मीदवार दिन रात दरवाजे बजा-बजाकर अपना प्रचार कर रहे थे। फच्चों का कहना था कि इतनी भीड़ तो किसी हॉल डे में भी नहीं थी। (शायद इसी डे से मैं हॉल डे नहीं मनाया जाता।)

खैर politics जो ना कराए सो थोड़ा। योग-गुरु बाबा रामदेव जब इस रोग से ना बच सके, तो ये तो कंवल लात्र हैं। पर यदि पेट्टु बाज़ी देसे ही चलती रही, तो भूल जाइए कि युवा पीढ़ी भारत सुधारेगी।

II Tian कुटो और बिल्लियाँ

ब्रांड IIAT सिर्फ़ छात्रों तक सीमित नहीं। ऐसा लगता है कि यहाँ के पश्चु मी इस ब्रांड से प्रभावित हैं और अपने IIAT को पे गर्व करते हैं। यहाँ के कुटो और बिल्लीयाँ रहस्यी की जिंदगी रही हैं और जहाँ भी जाते हैं अपना चेटेस बरकरार रखते हैं। कोई सीधा-सादा आदमी आम जानवरों की तुलना में IIAT ब्रांड धारक कुटो-बिल्लीयों को इज्जत से देखता है। और देखे भी क्यूँ न? आपने यहाँ कभी किसी कुटो को किसी पर भौंकते देखा या किसी मास्ट्री सी बिल्ली के पीछे भागते हुए देखा है? यहाँ के कुटो तो कुतिया के पीछे भी ना आगे (इसीनिये सिंगल जो है)। यहाँ कुटो और बिल्लीयों के छात्रों से कुछ गुण मिलता हुआ पा सकते हैं। हमारी ही तरह ये मैसे का पावन व स्वादिष्ट खाना खाते हैं और तो और यहाँ के कुटो बिल्लीयों की कम तदाद से हमारी ही तरह फ्रूट्स हैं। और समझदार भी हैं- इसीनिये ये बसा, साईंकल या बिल्ली के पीछे कभी नहीं भागती हैं। वहीं यहाँ की बिल्लीयाँ अपने पीछे दस्तों कुटो को भगाती हैं।



के मैदान पर हक जाने के लिए पटेल और नेहरू के कुटों के बीच जंग छिड़ी हुई है। अब इस जंग में आजाद हॉल के कुठे कैसे पीछे रह जाते, वे भी कूद गये जंग में और बोले के प्याज का इलाका आजाद का है और खुला मैदान पटेल और नेहरू बाँट लें। कभी-कभी अपना फ्रूट्सापा निकालते कुठे 2.2 मारते नजर आते हैं।

हाल ही में संपन्न हुए हॉल डे में पहली बार कुटो को नहाते देखा। सभी पहुँच गये जिमखाना के पीछे वाले

तलाब जो कभी
गंगा की तरह
चुच्च हुआ करता
था। अब तो इस
तलाब का जिक्र
सिर्फ G.Secs
के प्रोजेक्ट में
होता है कि
साफ कर दिया जायेगा पर
अभी तो ये यहाँ के पश्चुओं का
रनानागार ही बना हुआ है।

Phone : 258744

9332065817

ALICE OPTICIANS

Computerized Eye testing
and Contact Lens Clinic

All types of Contact Lenses

Timing – 9 am to 9pm

181, Gole Bazar,

Thursday closed

Kharagpur – 721301

बात संपादक की

हम अन्यंत वर्ष के साथ अपने पाठकों के समक्ष इस वर्ष का तीसरा अंक प्रस्तुत कर रहे हैं। हम कैम्पस के समर्थाओं को उजागर करने तथा उन्हे सुलझाने के अपने कार्य की ओर प्रतिबद्ध हैं और हमेशा इस तरफ सार्थक प्रयास में लगे हैं।

हमने कुछ नये भाग जैसे के.जी.पी. के भूते बिसरे लिंगो, फ्रुट्ट कॉर्नर शुरू किये हैं। हम इस अंक में कौन्सेलिंग सेंटर पर लेख प्रस्तुत कर रहे हैं। साथ ही हमारी आरंभ और छांसे हुई हमारी वार्ता पर लेख प्रस्तुत है। रेल संसाधन के लिए रेल मंत्रालय और आई.आई.टी. खड़गपुर के बीच हुआ समझौता आदि पर लेख प्रस्तुत है।

हाल ही में यहाँ से चुनावों का मौसम गुज़रा है। इस बार के चुनाव खुद में ही अनोखे रहे। आर.पी. छात्रावास से दो - दो वाईस प्रेसिडेंट उम्मीदवारों के खड़े होने के कारण पूरे चुनावों की दिशा ही बदल गई थी। चुनाव में विजेता रहे सारे उम्मीदवारों को हमारी शुभकामनाएँ और आशा है कि वे अपने कार्यकाल को इमानदारी से निभायें और अपने चुनावी प्रस्तावों को पूर्ण करने की पूर्णतया कोशिश करें। इस अंक में हमने विजेता उम्मीदवारों के चुनावी प्रस्ताव प्रस्तुत कर रहे हैं। हम अगले अंक में पुराने प्रधानों के कार्य की समीक्षा करेंगे।

वार्ताविकाता के धरातल से दूर राष्ट्रीय शिक्षा एवं अनुसंधान आयोग बिल

पिछले कुछ अंकों से लगातार हमने देश में उच्च शिक्षा की दशा-दिशा पर लिखा है। इसका मुख्य कारण वर्तमान सरकार और विशेष रूप से मानव संसाधन मंत्री के लगातार प्रयास और परिणामवश शिक्षा नीति में आये लगातार परिवर्तन हैं। इसी कड़ी में अगली खबर ये है कि सरकार राष्ट्रीय शिक्षा एवं अनुसंधान आयोग बिल 2010 को लागू करने का मन बना रही है। बिल पर नजर डालें तो सबसे प्रमुख बात जो सामने आती है वो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के स्थान पर एक नयी एकीकृत संस्था का प्रस्ताव है। वार्ताव में इन संस्थाओं की कार्यप्रणाली और उनके प्रभाव पर सावाल उठते ही रहे हैं। पर नये बिल में ऐसा मान लिया गया लगता है कि भारत में उच्च-शिक्षा का कोई अस्तित्व रहा ही नहीं है। इसके अलावा इसके गठन की प्रक्रिया भी कुछ अवार्तविक लगती है। इसके गठन की शुरूआत एक समिति के निर्माण से होगी जिसके मुख्य सदस्य नामांकित होंगे जो की सह-सदस्यों का चुनाव करेंगे। इसके बाद सारे सदस्य मिल कर तीन लोगों के एक पैनल का प्रस्ताव चयन समिति को भेजेंगे जिसमें से सभापति और बाकी सदस्यों का चयन होगा। सभापति की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जायेगी। समर्थ्या ये है कि नामांकित सदस्यों की संख्या और उनकी चयन प्रक्रिया के बारे में बिल में कोई जिक्र नहीं है। गठित समिति के अन्य कार्मों में एक योग्य व्यक्तियों की सूची बनाना भी शुरूआत है जिससे विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की नियुक्ति की जायेगी। इसके अलावा समिति साल भर में सिर्फ एक बार मिलेगी। अब समर्थ्या ये है कि साल भर में एक बार मिल एक दूसरे को अच्छे से न जानने वाले लोग इतनी

अहम बातों पर सहमति कैसे बना पायेंगे? और क्या गारंटी है इस तरह से चुने गये कुलपति साधारणतया आवेदन मंगा कर चुने जाने वालों से बैहतर होंगे? इस तरह की किसी भी प्रणाली का किसी भी देश में कोई दूसरा उदाहरण भी नहीं मिलता।

दूसरी समस्या विश्वविद्यालयों के गठन को लेकर है। इस बिल में ये माना गया है कि शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह से या केंद्र या राज्य सरकारों के जिम्मे है। केंद्रिय विश्वविद्यालयों की संख्या निनी-चुनी है और राज्य सरकारों द्वारा विश्वविद्यालयों के गठन को उनके गिरते स्तर को देख कर और कठिन बनाया जा रहा है। राज्य सरकारों को इस बिल के हिसाब से नये विश्वविद्यालय खोलने के लिये 8 कड़े खर्चों से गुजरना होगा तब एक विश्वविद्यालय खुल सकेगा जिसकी मान्यता 10 सालों के लिये होगी और उसे खत्म भी किया जा सकता है। अब सौंचने की बात है कि राज्य सरकारें इतना कष्ट कर्त्ता उठायेंगी? कहीं ऐसा न हो कि इसका उल्टा असर भी हो जाये और विश्वविद्यालय खुलना ही बन्द हो जाये।

इस बिल के हिसाब से अब कोई नया डीम्ड विश्वविद्यालय भी नहीं खुलेगा। हाल के वर्षों में ऐसे विश्वविद्यालयों की बढ़ और उनमें शिक्षा के गिरते खर्च को देखते हुये ये कदम सही ठहराया जा सकता है। पर इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि हमें उच्च शिक्षा के और केंद्रों की सरकार जरूरत है और बजाय इसके कि इनके खुलने की प्रक्रिया कठिन कर दी जाये इस बात की आवश्यकता है कि इनमें शिक्षा का स्तर सुधारा जाये। उपरोक्त बिल में निहित भावना और उसके उद्देश्यों की निश्चित तौर पर साराहना करनी होगी तोकिन इसको वार्ताविकता के धरातल पर लाने के लिये अभी इसमें कई सुधारों की आवश्यकता है।

सामंजस्य

सामंजस्य VGSOM द्वारा आयोजित किया जा रहा फेर्स्ट है जिसका मूल उद्देश्य corporate एवं NGO's का सामंजस्य अर्थात "collaboration" है। आज की स्थिति में समाज की परिवारिक और आर्थिक समस्याओं को महेनज़र रखते हुए यह जनहित के लिए लिया गया एक सामाजिक कदम है। इस फेर्स्ट में विभिन्न कार्यक्रम जैसे wired ,NGO केस स्टडी, सोल्स-पिच एवं ग्रीन और जल संग्रहण पर वर्कशाप्स आयोजित की गई जिनकी शुरूआत 19 मार्च को कालीदास ऑडिटोरियम में शाम 6:00 बजे "द पल्सेटीन्ज फिन्ञरप्रिन्ट्स" नामक रॉकबैंड के गीर्वे से हुई। उद्घाटन पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रो मधुकर शुक्ला उपस्थित थे जो कि St. Xavers Research institute (XLRI) में सीनीयर प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं।



इस फेर्स्ट में कई तरह की प्रतियोगिताएँ भी आयोजित करायी गयी

हाल ही में कैम्पस में हुए विभाग संबंधी उल्लंघन जैसे समुद्र अभियांत्रिकी एवं नाविक स्थापत्य विभाग का 'समुद्र मंथन', रसायनिक अभियांत्रिकी विभाग का 'कैमिन्साईट', धातुकर्म एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग का 'कॉम्पोसिट' एवं विनोद गुप्ता प्रबंधन विद्यालय का 'सामंजस्य' का आयोजन हुआ। इन सभी पर विशेष लेख प्रस्तुत हैं।

राष्ट्रीय खबरों की बात करें तो हाल में ही संसद में पारित हुए महिला आरक्षण विधेयक से जहाँ मुलायम सिंह और लालू प्रसाद यादव नाराज़ दिखे, वर्ही कांग्रेस और बी.जी.पी. ने बेंजिङाक इसे पारित किया। भारत में खेले जा रहे आई.पी.एल. मैर्चों ने सबको उलझा ही रखा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ओबामा शासन में पारित हुए 'स्वास्थ्य विधेयक' ने इतिहास ही रच दिया।

हमने कुछ नये सुधार लाने की कोशिश की है। आपके बहुमूल्य सुझाव इस ई-मेल पर भेजें - एक्टिविटी। इद्याठक्कमनि। एवं हमारा अगला अंक उत्तीर्ण हो रहे छात्रों पर विशेष होगा। आशा है कि यह अंक आपको पसंद आयेगा। बस इन वर्चनों के साथ हम अपने पाठकों से आज्ञा मांगते हैं।

जय हिन्द।

संपादक, आवाज़।



कपिल सिल्बल

आवाज़ टीम

मुख्य संपादक:

विकास कुमार, सुरेंद्र केसरी

संपादक:

अविमुक्तेश भारद्वाज, वर्णन प्रकाश

सह संपादक:

आशुतोष कुमार मिश्रा, सोनल श्रीवास्तव, अमन कुमार, सिद्धार्थ दोशी, सुकेश कुमार

स्पोर्ट्स:

मधुसूदन, रवाति दास, निष्ठा शर्मा, निधि हरयानी, प्रतिक भास्कर, अनुराग कटियार, सिमान्ता उज्जैन, सुप्रिया शरण, कुणाल मिण्डा

जनियर स्पोर्ट्स:

रोहन भटोरे, वैभव श्रीवास्तव, अनिमेश चौधरी, सुशील राठी, अमित कुमार डालमिया, सुगन्धा

पाठकों के विचार एवं सुझाव
आमंत्रित हैं

editor.awaaz@gmail.com

जिनमें मुख्य रही परिश्रम, शिक्षण, विचार एवं कलाकार विकास। परिश्रम में प्रतियोगियों से NGO case study करवायी गयी जो कि 3 चरणों में संपन्न हुई। शिक्षण में GD आयोजित करवाया गया जिसमें जल संरक्षण व कंपनियों का इसमें क्या योगदान हो सकता है इस विषय पर चर्चा हुई। विचार में NGO, corporate तथा शासन के प्रतिनिधियों ने 1 ही मंच पर विश्वव्यापी वापकम वृद्धि जैसी पार्यवाचिक समस्याओं के समाधान व छात्रों को इसमें क्या भूमिका हो सकती है इस विषय पर चर्चा की। खलाकार विकास में अल्पाधिकार प्राप्त लोगों की सहायता के लिए उनकी कला का प्रदर्शन किया गया।

इसके स्पानसर्स में Michelin व Hindustan CocaCola Beverages Ltd. M जैसे बड़े नाम शामिल हैं। यह फेर्स्ट साधारण B-School events से बिन्कूल अलग

क्या आपको पता है कि हमारी रोज़मर्हा की ज़रूरतों को पूरा करने वाले टेक मार्केट का इतिहास भी हमारे संस्थान जितना ही पुराना है। जी हाँ, टेक मार्केट सन 1951 से मौजूद है। हालाँकि उस समय इसका रूप ऐसा नहीं था जैसा अब है। दुकानों की संख्या भी ज्यादा नहीं थी। पहले कई दुकानें दिन और दर्दनाक सीधी बनी होती थी।

टेक मार्केट में को-ऑपरेटिव सोसाइटी की दुकानें सबसे पुरानी हैं जो कि 1951 से हैं। इनकी स्थापना संस्थान द्वारा ही की गई थी। सबसे पहले केवल इन्हीं से टेक मार्केट की शुरूआत हुई। इस प्रकार की दुकानें न केवल आईआईटी खड़गपुर बल्कि सभी IITs में हैं। इनके रख रखाव पर खर्च भी संस्थान द्वारा ही किया जाता है। और यदि इन दुकानों पर काम कर रहे कर्म

KGP झटका

चारियों की मानें तो किसी भी सामान के खराब होने पर संस्थान द्वारा उसे तुरंत बदला जाता है। या उसकी भरपाई की जाती है। और सभी वस्तुओं की कीमत अन्य दुकानों जितनी ही है। हालाँकि यह बात सभी वस्तुओं के लिए सत्य नहीं है।

इनसे क्या कहें?

शायद बहुत कम लोगों को पता होगा कि टेक मार्केट का एक

कार्यालय भी है। कार्यालय का मुख्य कार्य सब्जी, फल इत्यादि के विक्रेताओं से प्रतिदिन का किराया वसूल करना है और उस राशि का प्रयोग टेक मार्केट की सफाई, रख रखाव, पानी की आवश्यकता आदि पर खर्च किया जाता है। भले ही टेक मार्केट शॉपिंग मॉल्स की तरह भव्य व आधुनिक न हो पर एक केजीपियन के लिए बेहद अहम है।

एक पहलू ऐसा भी

जिस दिन आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट ने राज्य से मुसलमानों के लिए सुरक्षित



4% आरक्षण रद्द कर दिया है, दूसरी तरफ पश्चिम बंगाल राज्य सरकार ने मुसलमानों के लिए 10% आरक्षण की घोषणा कर दी है। अतः पश्चिम बंगाल में अब ओ.बी.सी. कोटा सीधा 7% से बढ़कर 17% हो चुकी है। इस एकाएक बढ़े आरक्षण के बजाए से कई यथातथ्य बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। सी.पी.एम. अब त्रिमूल कांग्रेस से इस विषय में पीछे नहीं रहना चाहती। गौरतलब है कि विधानसभा चुनाव अगले वर्ष हैं, अतः यह सारी राजनीति मुसलमान वोटों को बढ़ावने के चक्कर में ही कुटनीति का एक उदाहरण प्रतीत हो रहा है।

यह कैसी विडियो है कि यह नेता अपने फायदे के लिए जनता को बेवकूफ बनाते हैं और अपनी उन दुष्कर्मों को अपनी ताकत बताकर जनता को गुमराह करते हैं। राज्य सरकार की माने तो यह आरक्षण दीन जनता के लिए है पर इसके लागू होने हेतु न्यूनतम आय लीमा इतनी ज्यादा है कि यह कुछ और ही कथन कर रही है।

कई साल उठ रहे हैं, जैसे इतने वर्षों के राज के बाद ही क्यों सी.पी.एम. को यह करने की सूझी है। क्या पश्चिम बंगाल ने आंध्र प्रदेश की गलतियों से कुछ नहीं सीखा? भले ही इस कदम से सी.पी.एम. को मुसलमान वोटों की सहानुभूति मिली हो, कहीं न कहीं दीन हिन्दू इससे नाखुश हुए हैं। अब यहीं देखना है कि अगले चुनाव में सी.पी.एम. को इससे लाभ होता है या नुकसान। वैसे इस आदेश के खिलाफ कोलकाता हाई कोर्ट में मुकदमा दर्ज किया गया है और आशा है कि जल्द ही सही निर्णय लिया जायेगा।

नोशान इंक - प्रगति की ओर एक और कदम

पूरी तरह से साफ हो जाएगा कि किसका पलड़ा भारी है।



हाल ही में 'नोशान इंक' ने सी.ई.एस में 'नोशान इंक एडम' नामक अपने प्रोडक्ट को लॉच किया। यह एक तरह का आई-पैड है। इसकी खासियत कैमरा है, जिससे किसी भी कोण से तरवीर या वीडियो बनाई जा सकती है। इसका 'टच पैड' बाकियों की तरह आगे न होकर, पीछे की तरफ है। इसके डिजाइन को भारत में तैयार किया गया है, जबकि यह तारीखान में बन कर तैयार हुआ है। 'नोशान इंक' के रोहन श्रवण सी.ई.ओ., "रोहन श्रवण" जो कि आई.आई.टी खड़गपुर के 2008 बैच के पासआउट हैं, के अनुसार इस तकनीकी पैड का इस्टेमा नेट-ब्राउज़र्स के अलावा गेम्स, मल्टीमीडिया आदि में किया जा सकता है। अगर इसकी तुलना एप्ल आई-पैड से की जाए तो शायद यह थोड़ा मुश्किल हो।



	एप्ल आई-पैड	नोशान इंक एडम
स्क्रीन	9.7 इंच, एस.ई.डी. लैटेक्सिट ब्लैसी वाइडक्रीन, मल्टी टच डिस्प्ले	10.1 इंच, Pixel Qi TFT लिकिड क्रिस्टल डिस्प्ले, WSVGA डिजिटल्यूएल
सी.पी.यू.	एप्ल ए 4 प्रोसेसर	एन वीजिया टेग्रा 2
नेट ब्राउज़र	एप्ल सफारी	फायरफॉक्स, कोर्म
फैमरा	नहीं है	जीग्रापिक्सेल ऑटो फोकस
वजन	1.5 पाउंड	1.34 से 1.36 पाउंड
वायरलैस	वाई-फाई(802.11 ए / बी / जी / झ)	WLAN 802.11 बी / जी
	ब्लूटूथ 2.1	WWAN 3 जी HSDPA
	3 जी UMTS/HSDPA	ब्लूटूथ 2.1 A2DP
बैटरी	10 घंटे तक	16 घंटे तक
टचपैड	नहीं है	है
मल्टीटास्किंग	नहीं है	है



CITI TRAVELS

A Complete Travel Solution



- Int'l. & Dom. Package Tours
- Hotel Bookings
- Visa Services
- Insurance

- Air Tickets
- Govt. Auth. Passport Agent
- Forex Facilities
- Car Rental

KOLKATA

167P, Rash Behari Avenue, Gariahat Junction, Kolkata-19 (Jasoda Bhawan No.2)

Ph.: 2440-5124 / 3038 / 0741, Fax: 2460-1564. e-mail: cititravl@cal.vsnl.net.in, cititravl@gmail.com

KHARAGPUR (Paschim Medinipur)

IIT Main Road, Puri Gate, Kharagpur-721 306. Ph.: 03222 279803. e-mail: cititravlkgp@yahoo.co.in

Mobile no. :- 9832273338, 9832979787

राजभाषा विभाग की कलाम से

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि 'आवाज़' पत्रिका का नया अंक शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। 'आवाज़' पत्रिका हमेशा से ही राजभाषा विभाग के लिए महत्वपूर्ण पत्रिका रही है क्योंकि यह छात्र एवं संस्थान के बीच में एक सशक्त कड़ी के रूप में जानी जाती है। इस पत्रिका के माध्यम से छात्रों की आवाज़ एवं उनकी भावनाओं से हम सभी अवगत होते हैं। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग विगत वर्ष में इसका प्रकाशन करता था। लेकिन कुछ तकनीकी कारणों से इस पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा विभाग के बैनर तले सम्भव नहीं हो पा रहा है। यह छात्रों के उत्साह व उनके दृढ़ संकल्प का नतीजा है कि ये लोग अपना बहुमूल्य समय लगाकर इस पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं। मैं इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर के अंतर्गत हो रही विभिन्न गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करना चाहूँगा।

संस्थान का राजभाषा विभाग, केन्द्र सरकार की राजभाषा नीति के कियान्वयन में निरंतर प्रयासरत रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए प्रतिबद्ध यह विभाग अपने नियमित क्रिया कलापों एवं राजभाषा गतिविधियों के अतिरिक्त प्रत्येक तिथिमहीने में कार्यशाला व प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी करता है। गत वर्ष अगस्त में विभाग में हिन्दी अधिकारी डॉ. राजीव कुमार रावत की नियुक्ति हुई है। इसके साथ ही राजभाषा नीति के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष के क्रियान्वयन को गति मिली है। नीति के अनुसार विभाग के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति (रा.का.स.) एवं प्रगति के नियमित व निगरानी के लिए प्रगति मापन समिति का गठन किया गया है।

गत वर्ष 7 सितंबर से 14 सितंबर तक विभाग द्वारा हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। संस्थान छात्रों, कर्मचारियों एवं परिसर स्थित विभिन्न स्कूलों के छात्रों के लिए हिन्दी संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं विजेता प्रतियोगियों में पुरस्कार दररूप 10,000 रु. की राशि वितरित की गई। प्रो. एच.सी.रम्मा के दो व्याख्यान 'भौतिकवेत्ताओं की गाथा' एवं 'तत्त्व

कैसे बनते हैं' इस आयोजन का मुख्य आकर्षण रहे। छात्रों द्वारा प्रस्तुत कविता सम्मेलन एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग के प्रो. सत्यहरि दे की पुस्तक 'जैव प्रौद्योगिकी शब्दावली' का विमोचन भी इस आयोजन के अन्तर्गत किया गया।

राजभाषा विभाग की एक वेबसाईट भी द्विभाषी बनाई गई है जिसे संस्थान की वेबसाईट से लिंक किया गया है। राजभाषा विभाग संस्थान की समर्त्त गतिविधियों को समेटे हुए एवं हिन्दी संबंधी नीति-नियमों-साहित्य चर्चा से परिपूर्ण मान्यता प्रदान करता है। इसके अंतर्गत उन्हें यूनिकोड का प्रयोग भी सिखाया जाएगा तथा हिन्दी सॉफ्टवेर की जानकारी भी दी जाएगी।

12-13 जनवरी 2010 को विभाग की ओर से संस्थान के प्राज्ञ उत्तीर्ण कर्मचारियों के लिए कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिये दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत उन्हें यूनिकोड का प्रयोग भी सिखाया जाएगा तथा हिन्दी सॉफ्टवेर की जानकारी भी दी जाएगी।

18-19 फरवरी 2010 को हिन्दी में तकनीकी तथा अभियांत्रिकी लेखन पर दो दिवसीय कार्यशाला के आयोजन करने का कार्यक्रम है। इस संगोष्ठी में विज्ञान एवं विषयों का पठन हिन्दी माध्यम से वरिष्ठ अधिकारियों एवं विषय विशेषज्ञों के द्वारा किया जाएगा।

मैं इस स्तंभ के माध्यम से अपने सभी छात्रों/संकार्यों से अनुरोध करता हूँ कि वे राजभाषा संबंधी क्रियाकलापों में सहभागी बनें और राष्ट्रभाषा के माध्यम से अन्य विकसित चालों की तरह भारत को भी प्रगति के सार्वत्रिक शिखर पर ले जाने में अहम भूमिका निभायें।

(प्रो. पी.डी. श्रीवास्तव)

अध्यक्ष

काउंसलिंग सेंटर - एक नज़ार

इसी सत्र से कैम्पस में शुरू हुए काउंसलिंग सेंटर की गतिविधियों के बारे में हमने वहाँ नियुक्त मनोचिकित्सक डॉ. राजलक्ष्मी गुहा का साक्षात्कार लिया। उनसे

हुई हमारी बातचीत में छात्रों को होने वाली मानसिक समस्याओं के बारे में कई पहलू उभरकर सामने आए।

1 | किन परिस्थितियों की वजह से कैम्पस में काउंसलिंग सेंटर की स्थापना की गई?

डॉ. गुहा : साल 2009 में IIT कैम्पस में चार महीनों में आनंदहत्या की चार दुखद घटनाओं ने काउंसलिंग सेंटर की अनिवार्यता को उजागर किया। फिर इनने बड़े संस्थान में एक मनोचिकित्सक की उपस्थिति आवश्यक हो गई थी। इसी को ध्यान में रखते हुए सितंबर 2009 में काउंसलिंग सेंटर शुरू किया गया।

2 | काउंसलिंग सेंटर शुरू होने पर इसे कैसा प्रतिसाद मिला?

डॉ. गुहा : काउंसलिंग सेंटर शुरू करने पर हमें अंदराजा नहीं था कि यह कितने छात्रों के काम आएगा। फिर छात्रों ने खुद ही आकर इस सुविधा का लाभ उठाना शुरू किया तो कुछ को उनके दोस्तों ने लाया। अब तक हमारे पास 70 से ज्यादा केस आ चुके हैं। जल्द ही हम कुछ और प्रशिक्षित मनोचिकित्सकों को नियुक्त करने वाले हैं।

3 | आमतौर पर यहाँ के छात्र किस तरह की समस्याओं का सामना करते हैं? और इनके क्या कारण हैं?

डॉ. गुहा : यहाँ छात्रों को कई तरह की दिक्कतें होती हैं। जैसे कई छात्र यहाँ के माहील के अनुरूप खुद को नहीं ढाल पाते, उन्हें यहाँ के खाने

या नौसम से परेशानी होती है। अत्याधिक कंप्यूटर गेमिंग और इंटरनेट से भी कुछ छात्र सामंजस्य नहीं बिना पाते। फिर संबंध विच्छेद, अंकोहन या ड्रग व्यासन, भी कुछ कारण हैं जिनसे लोग डिप्रेशन के शिकार हो जाते हैं। इसके अलावा कई छात्र खुद से अत्याधिक अपेक्षा के कारण तनाव में आ जाते हैं।

4 | छात्र अपने रूपरत पर तनाव से बचने के लिए क्या कदम उठा सकते हैं?

डॉ. गुहा : छात्रों को अपनी दिनचर्या को नियमित करने पर ध्यान देना चाहिए, खासकर कि समय पर सोना, खाना और कसरत। ऊम पर बंद होने के बजाए लोगों से बातचीत करते रहना चाहिए।

5 | परामर्श केंद्र के छात्रों के और सुलभ बनाने के लिए आप क्या कदम उठा रही हैं?

डॉ. गुहा : छात्रों तक हमारी पहुँच और आसान बनाने के लिए हम जल्द ही एक वेबसाईट लाने वाले हैं। छात्रों से हमारी अपेक्षा है कि वे खुद अपने आसपास नज़र रखें और जरूरतमंद छात्रों को यहाँ तक लाने में मदद करें। इसके अलावा छात्रों को यह समझना चाहिए कि यहाँ आने का मतलब यह नहीं कि उन्हें कोई मानसिक समस्या है, छात्र खुद को संभाल सकें तो ठीक है पर समस्या की पहचान जरूरी है।

परामर्श केंद्र के खुले रहने का समय : दोपहर 11 से 1:30, शाम 4 से 7
फोन नंबर : 03222 281174

ई-मेल : cc@iitkgp.ernet.in

Liverpool

3 Shirts @ 899
3 T-Shirts @ 499*
2 Jeans @ 899
2 Cotton Trouser @ 899

"Collection for Girls & Boys"

Sh.no.28-Gole Bazar
South of Bata Shop, Kharagpur
Contact-03222-226187

vishalkgp@gmail.com

नाम : अरव अनमोल मनोहर
विभाग : एचॉफेसु इन्जीनियरिंग
हॉल : नैहरू हॉल
पद : जैनरल सेक्रेटरी टेक्नोलौजी



प्रस्ताव :

- 1 इन्होंने टेक्नोलौजी जैनरल चैम्पियनशिप के आयोजन में प्रश्नावली देने से निर्णय लेने तक में उद्योग जगत के शामिल होने का प्रस्ताव दिया। इससे कंपनियाँ चैम्पियनशिप के दौरान ही छात्रों में छुपी प्रतिभा को पहचान सकेंगी और आई.आई.टी. खड़गपुर भी शोहरत के नए पायदान पर पहुँचेगा।
- 2 इन्होंने अपने दूसरे प्रस्ताव में क्षितिज में अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी का पक्ष लिया। इसके लिए इन्होंने विदेश से आने वाले प्रतियोगियों के यात्रा में तगे पैरों की प्रतिपूर्ति करने का प्रस्ताव दिया। इससे प्रतियोगिता की गुणवत्ता बढ़ेगी और साथ ही साथ क्षितिज को अंतर्राष्ट्रीय कंपनियाँ रूपौसार के रूप में मिल जाएँगी।

नाम : तरुन राठी

विभाग : गणित

हॉल : एच.जे.बी हॉल ऑफ चैम्पियन्स

पद : जैनरल सेक्रेटरी टेक्नोलौजी



प्रस्ताव :

1. क्षितिज 2011 में जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण निर्चतरता पर युगा शिखर सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा जिससे संबंधित छात्रों को संवाद के लिए अंतर्राष्ट्रीय मंच प्रदान होगा।
2. टेक्नोलौजी जैनरल चैम्पियनशिप के अंतर्गत आयोजित किये जाने वाली प्रतियोगिता "हार्डवेयर एक्जिभिशन" को "आई.मेक.ई." द्वारा प्रमाणित किया जाएगा। इसके फलस्वरूप जीतने वाली टीमों के सर्टिफिकेट का महत्व बढ़ेगा।
3. प्रथम वर्ष के छात्रों को जावा में जैनरल एल्गोरिदम तथा कोडिंग सिखाने के लिए "आईएनटैशन वर्कशॉप" का आयोजन किया जाएगा जिससे उन्हें क्षितिज तथा जैनरल चैम्पियनशिप के इवेन्ट में हिस्सा लेने में मदद मिलेगी।

मेडिकल कॉलेज का प्रस्ताव रद्द

स्वास्थ्य मंत्रालय ने IITs में मेडिकल कॉलेज के प्रस्ताव पर रोक लगा दी है। स्वास्थ्य सचिव "केओ सुजाता" की अध्यक्षता में हुई मीटिंग में यह निर्णय लिया गया कि IITs को MBBS कोर्स से के बजाय चिकित्सा सूचना तकनीकि, बायोमेडिकल अभियंत्रीकि एवं 'ई हेल्थ' पर कोर्स शुरू करना चाहिए। स्वास्थ्य मंत्रालय IITs को AIIMS एवं PGI(चंडीगढ़) के मदद से इन कोर्सों को शुरू करने का सुझाव देगी। MCI जो कि पहले इन सुझावों का समर्थन कर रही थी, ने बैठक में इसका विरोध किया। आश्चर्य की बात यह है कि MCI के अध्यक्ष केंद्र देसाई ने कहा था "मेरा मानना है कि IITs को मेडिकल कोर्स के समान उनके अन्य कोर्सों के समान फलदायी होगा।" परं अब विशेषज्ञों का कहना है कि IITs को अपना काम करना चाहिए एवं

चिकित्सा शिक्षा देना उनके लिए उपयुक्त नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि IIT खड़गपुर को छोड़कर जो कि खुद का अस्पताल बनाने की बात कह रहा है, बाकि सभी IITs प्राईवेट अस्पताल के साथ गठबंधन की बात कर रहे थे। स्वास्थ्य मंत्रालय का कहना था कि निजी अस्पताल उच्च चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध कराने में कम सहायक होंगे।

कुछ IITs जैसे IIT खड़गपुर एवं IIT हैदराबाद ने तीन साल में मेडिकल कॉलेज बनाने पर काम शुरू कर दिया है। IIT खड़गपुर ने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के साथ चिकित्सा एवं जैव स्वास्थ्य अभियंत्रीकि में कोर्स संचालन के लिए अस्पताल बनाने हेतु MoU साझन किया है। बैठक में AIIMS, PGI(चंडीगढ़), PGI(लखनऊ), JIPMER, NIMHANS, NIPS एवं CMC वेल्लौर के निदेशक मौजूद थे।

SRIC - अनुसंधान क्षेत्र में नए आयाम

पिछले दिनों 20 मार्च को हैदराबाद में टेक्नोलौजी ट्रांसफर ग्रुप (TTG) द्वारा IndAc'10 का सफल आयोजन किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य अनुसंधानों में परापर सहयोग, सलाह एवं औद्योगिक तकनीकियों का आदान प्रदान था। गौरतलब है कि TTG, IIT खड़गपुर में SRIC के तहत कार्यशील है। SRIC, एक विशिष्ट अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ है। 1982 में इसकी स्थापना IIT एवं निवेशकों के बीच सुदृढ़ माध्यम बनाने के लिए की गई थी। इसके बाद SRIC निरन्तर प्रगति कर रहा है।

अभी तक SRIC तकरीबन 1221 अनुसंधान प्रकल्पों को समन्वयित कर चुका है जिनकी कुल लागत लगभग 104 करोड़ है। वर्तमान में



कम्प्यूटरीकृत कार्यालय और आंतरिक बैंकिंग होने के कारण SRIC एक ही समय में 600 अनुसंधान कार्य निर्दिष्ट करवाने में सक्षम है। फिलाई 300 करोड़ लागत के 850 प्रकल्प कार्यान्वित हो रहे हैं।

टेक्नोलौजी ट्रांसफर ग्रुप (TTG) छात्रों का समूह है जो इंडर्स्ट्री और IIT के बीच कड़ी का काम करता है। इनका कार्य नयी तकनीकियों को इंडस्ट्री के समाने रखना है तथा ये IIT को एक तकनीकी कंसल्टेन्ट संस्थान की तरह पेश करना चाहते हैं। SRIC के अन्तर्गत कई वर्कशॉप आयोजित की जा चुकी हैं। तकरीबन 127 पेटेन्ट भी दायर किए जा चुके हैं जिन में से 25 को रजीकृत भी मिल चुकी हैं।



-धन्यवाद

Technology कार्टून कोना

VP Sop Box

पेनल

पेनल के प्रश्न सुनकर सब लोग हैलू

उसके बाद

मेरे पास KJ है

निदलीय candy, वृक्षारे पास क्या हैं

नीना सक्सेना एक्सलन्स इन टेक्नोलॉजी पुरस्कार के लिए नामांकन जारी :

आई आई टी खड़गपुर तकनीकी क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों के लिए नीना सक्सेना एक्सलन्स इन टेक्नोलॉजी पुरस्कार के लिए नामांकन आमंत्रित कर रही है जिसकी अंतिम तिथि 30 अप्रैल है। यह पुरस्कार डा. नीना सक्सेना की समृद्धि में लगातार तीन सालों से दिया जा रहा है। डा. नीना सक्सेना ने 1992 में आई आई टी खड़गपुर से बी.टेक (ई.सी.ई) आर्नस किया था। दुर्गांशुयवा, 2005 में उनकी मृत्यु हो गई थी।



इस पुरस्कार को उस टेक्नोलॉजिस्ट को दिया जाता है जिसने विज्ञान के क्षेत्र में कोई जबरदस्त काम किया हो तथा जिससे देश को फलप्रद लाभ हो। इस पुरस्कार की चयन समिति में आई आई टी खड़गपुर के निदेशक, डीन तथा कई कुछ प्रतिष्ठित फैकल्टी में्हर भी रहते हैं।

आई आई टी प्रस्तावित करेंगे गंगा बेसिन प्रबंधन की योजना :

पर्यावरण तथा वन मंत्रालय ने फैसला लिया है कि भारत के सात आई आई टी संस्थान द्वारा एक संघ का स्थापना किया जाएगा जो गंगा बेसिन के प्रबंधन पर अपनी योजना प्रस्तावित करेंगे। इस प्रसंग में पर्यावरण तथा वन मंत्री श्री जयराम रमेश ने कहा कि आई आई टी संस्थानों को गंगा बेसिन की सफाई की भी चुनौती लेनी चाहिए। मंत्रालय के मुताबिक 16 करोड़ की यह परियोजना एक साल के अंदर विकसित की जाएगी और फिर गंगा की सफाई के लिए कार्य योजना तैयार होगी जिसमें सीवेज ट्रीटमेंट शामिल है।



आई आई टी मुम्बई में हुए सम्मेलन में यह भी प्रस्तावित किया गया कि आई आई टी संस्थान वार्षिक तर्ज पर रिसर्च स्कालर कांग्रेस आयोजित करें। इस संदर्भ में यह ज्ञात हो कि पहला पी.एच.डी कांग्रेस 2010 के अंतिम चरण में आई आई टी खड़गपुर में होगा।

पी के सिन्धा सेन्टर द्वारा समर प्रोजेक्ट की पेशकश :

पी के सिन्धा सेन्टर ने समर र्टुडेन्ट प्रोजेक्ट 2010 की घोषणा कर दी है जिसमें द्वितीय वर्ष से लेकर पंचम वर्ष के छात्र आवेदन कर सकते हैं। इसमें छात्रों को “ग्रीन इन्जी इन्जीवेशन” पर प्रोजेक्ट के लिये निवेदन करना है जिसकी अंतिम तिथि 5 अप्रैल है। अधिक जानकारी “biofuel.com” पर लॉग करके प्राप्त किया जा सकता है।



आई आई टी खड़गपुर का अक्षय ऊर्जा को क्षेत्र में नेतृत्व :

पिछले कई दिनों से आई आई टी खड़गपुर में बायोइंजीनीजी को लेकर कई अनुसंधान चल रहे हैं और हाल ही में पी.के.सिन्धा.सेन्टर फोर बायोइंजीनीजी के स्थापित होने के बाद इस दिशा में नई पहल हुई है। इस प्रकरण में संस्थान ने गटीबों को ऊर्जा प्रदान करने के मुद्रे पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

इस मौके पर कई विशिष्ट सदस्यों ने भाग लिया जिसमें पश्चिम बंगाल ग्रीन ऊर्जा निगम लिमिटेड के प्रबंध निदेशक, रायानेश पांडे (हरक पावर सिस्टेम के सी.ई.ओ), अनिश ठक्कर (ग्रीनलाईट प्लॉनेट के सहसंस्थापक तथा निदेशक) थे। उन्होंने छात्रों को आन्ट्रप्रूनिशिप के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारी तथा ग्रामीण भारत को मजबूत बनाने के दिशा में चर्चा सुझाए।

भारत सरकार का आई आई टी से करार :

खाद्य सामग्री की गुणवत्ता को बढ़ावार रखने तथा खाद्य क्षेत्र में बेहतर निगरानी व्यवस्था शुरू करने के लिए सरकार देश के कई कृषि विश्वविद्यालयों तथा आई आई टी संस्थानों (जिनके पास खाद्य सामग्री के परीक्षण प्रयोगशालाएँ हैं) के साथ करार स्थापित करने पर विचार कर रही है।



फूड सोफ्टी एन स्टैन्डर्ड अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एफ एस ए आई, खाद्य स्थान तथा परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत स्वतंत्र) फिलहाल 20 संस्थानों से पैकट स्थापित कर रही है जिसमें आई आई टी खड़गपुर भी शामिल है। इन संस्थानों को आवश्यक उपकरणों की खरीद तथा अन्य खर्च के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करेगी। सूचना के मुताबिक, समय के साथ साथ जो भी परीक्षण किये जाएंगे उन्हें जनता के सामने प्रस्तुत किया जाएगा।

भारत के सभी आई आई एम संस्थानों में 2010 का प्लॉमन्ट सीजन अब अंतिम चरण में है। इस बीच जिनकी करोड़ की प्लॉमन्ट होती है वे सुर्खियों में छा जाते हैं और ये मान लिया जाता है कि आई आई एम से सभी लोगों की ऐसी जॉब लगती है। पर अगर उनके प्लॉमन्ट के आँकड़ों पर ध्यान दे तो यह झलकता है कि उनातकों को मिलने वाले जॉब पुराने ट्रेन्ड का ही अनुसरण कर रही है।

अगर हम दो-चार लोगों को छोड़कर जिन्हें करोड़ की पगार मिलती है, बाकी जनता पर ध्यान दें तो पता चलेगा कि टॉप 30 प्रतिशत छात्रों को 12 लाख से ऊपर की पेक्जेज मिलती है, अगले 40 प्रतिशत छात्रों को 8 से 12 लाख की तथा अंतिम 30 प्रतिशत छात्रों को 5 से 8 लाख से संतुष्ट होना पड़ता है।

विभिन्न आई आई एम संस्थानों से लगभग 50 छात्रों को चुनने वाली कंपनी, आईसीआईसीआई बैंक के कार्यकारी निदेशक, के.रामकृष्णार के अनुसार तीन वर्ष से कम अनुभव वाले किसी व्यक्ति के लिए 15 लाख की पैकेज पर्याप्त है।

COMPUTER CITY

ONE STEP SOLUTION FOR YR. PC.

BEST SERVICE & BEST PRICE

